Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

दक्षिण शैली की पल्लव काल एवं राष्ट्रकूट कालीन कला की प्रतिमाओं में चित्रित नारी

Vishal Pandey[1]* Dr. Arun Kumar Singh[2]

[1] Research Scholar, Shri Venkateshwara University, Gajraula, Amroha

[2] M.A., PhD (History)

सार – *भारतीय कला का संसार में सर्वोत्तम स्थान है। भारतीय कला भावना-प्रधान है। कला मस्तिष्क की अपेक्षा हस्त-लाघव से अधिक संबंध रखती है। कलाकार मिट्टी को ऐसा आकार प्रदान कर देते हैं जो सजीव प्रतीत होता है। हिन्दू मूर्तिकला बहुत ही कुशल कारीगिरी का संजीव चित्रण है। भारत में मूर्तियों की बनावट बहुत ही उपयुक्त ढंग से की गई है। मूर्ति स्थापत्य-वास्तु की आश्रित कला है। कला के माध्यम से किसी देश के सांस्कृतिक-गौरव एवं उसके विकास तथा उत्थान का परिचय मिलता है। भारत में कला का विषय-आत्मपरक है। भारतीय कला को परखने एवं उसे आत्मसात करने के लिए सूक्ष्म दृष्टि चाहिए। कारण यह है कि कलाकार सत्य का उपासक होता है। अतः आध्यात्मिक कला-साधना द्वारा भारतीय कला उनकी लोक कल्याण कला अमर है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ ही मूर्ति की परिकल्पना की गई। मूर्ति की परिकल्पना के दो मुख्य आधार थे सामाजिक एवं धार्मिक। सामाजिक दृष्टि से सर्वप्रथम मनुष्य ने मन-बहलाव के लिए खिलौने का रूप दिया। फिर हजारों वर्षों बाद जब धर्म का उदय हुआ, तब धर्म ने उस सामाजिक प्रतीक को धार्मिक संबंध का माध्यम बना दिया। प्रेम, श्रद्धा, निष्ठा, तृप्ति एवं संतोष का भाव विकसित होने पर मूर्ति का प्रतीक अधिक व्यापक और महत्त्वपूर्ण होता चला गया।*

कुंजीशब्दः *भारतीय कला, नारी, मूर्तियाँ, कलाकार*

----------X----------

प्रस्तावना

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में मातृदेवी को उच्चस्थान प्राप्त है। वह आदिकाल से ही शक्ति के रूप में पूज्य रहीं हैं। अन्य देशों कीभाँति भारत में भी मातृदेवी के रूप में देवी-पूजा अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है। मातृ के रूप में देवी जनसाधारण के मध्य अन्य देवताओं की अपेक्षा अधिक निकट हैं। इन्हें महीमाता, जगदम्बा, अम्बा, महामाई, मातृदेवी आदि नामों से जानाजाता है। देवी की सत्ता त्रिदेववाद से भी सम्बन्धित है। वह ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव की शक्तियों क्रमशः लक्ष्मी सरस्वती एवं उमा के रूप में प्रतिष्ठित है। वस्तुतः नारी परमात्मा के क्रियात्मक रूप को प्रकट करती है, शक्तिपूजा का मूल प्राग्वैदिक युग में माना गया है। मोहनजोदाड़ो का साक्ष्य मातृशक्ति की उपासना का सूचक है। ऋग्वेद में मातृदेवी के रूप में अनेक उल्लेखप्राप्त होते हैं, जिनमें अदिति सर्वाधिक लोकप्रिय थी। वाक्सूक्त में देवी को "श्रीमाता" कहा गया है। पौराणिक युग में मातृदेवी का यही रूप जन्मदाता याजगदम्बा के रूप में विकसित हुआ।

दक्षिण शैली की मूर्तियाँ एवं शिलाजटिल आलेखन मुख्यत दक्कन के तटीय क्षेत्रों में उपलब्ध है। इस युग की मूर्तियां विदेशी प्रभावों से मुक्त है और इनमें भारतीय परम्परा की स्थापना है। इनमें रूप की नई परिभाषा है जो शांत, ओजस्वी तथा आध्यात्मिक सौंदर्य के आदर्शों से प्रभावित है।

आन्ध्रवंश के अधीनस्थ प्रदेश के पूर्वी एवं पश्चिमी दोनों ही भागों में अत्यंत विकसित कला के उदाहरण विद्यमान है, जो ई. पू. द्वितीय शताब्दी के है। उसके पुरुषत्व कोमल सौंदर्य, उच्च बौद्धिक गुणों एवं दक्ष के प्रविधि के वह स्तर प्राप्त करने में कतिपय सहस्त्राब्दी लगी होगी। इस विचार के परिणामस्वरूप, आन्ध्र साम्राज्य के पूर्वी और पश्चिमी भागों में स्थित कोंडाणे, भाजा, बेडसा, कार्ले, अमरावती,

नागार्जुनकोंडा, अजन्ता और कन्हेरी से प्राप्त मूर्तियों के उदाहरणों का वर्णन किया गया है।

कोंडाणे के चैत्य में अलंकृत अग्रद्वार है, जिसकी कलाकृति अपने रूप एवं प्रेरणा में मुख्य रूप से काष्ठिक है। ई. सन् से तत्काल पूर्व की शताब्दियों में नृत्य कला काफी लोकप्रिय थी और वास्तव में यह बाद में भी लोकप्रिय बनी रही। अतः मूर्तिकारों के आरंभिक श्चैत्योंश् के बाह्य रूपों के अलंकारिक संयोजनों में नृत्य करते हुए युगलों को भी सम्मिलित कर लिया । संभवतरू बौद्ध धार्मिक परम्परा ने उसे चैत्यों के आंतरिक भाग में मानवीय जीवन के हल्के एवं तुच्छ पक्षों को चित्रित करने में अपनी दक्षता प्रदर्शित करने की अनुमति नहीं दी थी। बारीक कणों का पाषाण न होने के कारण आकृतियों की परिसज्जा खुदरी है, किन्तु आनन्दपूर्ण उन्मुक्त दृष्टिकोण तथा गति की लय अद्वितीय है और उनसे अत्यंत विकसित कला का परिचय मिलता है। मुखाकृति तथा स्वरूप वेशभूषा से प्रकट होता है कि नर्तक दक्कन के निवासी थे और इस प्रकार यह कला स्वदेशी थी। अपने शिरोवस्त्र एवं आभूषणों के कारण, ये नर्तक सांची एवं भरहुत की नक्काशी में प्रस्तुत लोगों जैसे हैं, किंतु उनमें वह दृढ़ता नहीं है जो सांची और भरहुत की मूर्तियों में सामान्य रूप से दृष्टिगोचर होती है।

अजंताः

चट्टानों को काटकर बनाए गए बौद्ध गुफा मंदिर एवं मठ, अजंता ग्राम के नजदीक, उत्तर-मध्य महाराष्ट्र राज्य, पश्चिमी भारत, अपनी भित्ति चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध औरंगाबाद से 105 कि. मी. पूर्वोत्तर में वगुर्ना नदी घाटी के 20 मीटर गहरे बाएं छोर पर एक चट्टान के आग्नेय पत्थरों की परतों को खोखला करके ये मंदिर बनाए गए है। इस गुफा के समीप ही श्अजन्ताश् नामक गांव स्थित है जो अजन्ता शब्द का जनक है। इन गुफाओं की चित्रकलायें अजन्ता लेनी अजन्ता गांव के आभूषण कहलाती है। अजन्ता के भित्तिचित्र रंगविधान, भाव प्रदर्शन, मुद्राओं केशविन्यास, विभिन्न वस्त्राभूषण, शारीरिक अनुपात, चक्षुचित्रण कटि-प्रदेश रचना में भारत के दर्शकों का नहीं, बल्कि विश्व के दर्शकों एवं पर्यटकों का मन आकर्षित किए बिना नहीं रहते।

भाजा का चैत्य:

पश्चिमी भारत के चैत्य गुहाओं में, जिनमें बाद में बौद्ध विहार स्थापित हो गए, भाषा का चैत्य विहार सबसे प्राचीन तथा कला एवं मूर्तियों के लिए विशेष महत्त्व रखता है। ष्भाजा का बौद्ध विहार पूना से थोड़ी दूर ही चट्टानों को काटकर बनाया गया है। इसके दायें-बायें अनेक विहार बने हैं ।

भाजा चैत्य का निर्माण 230 ई. पू. में हुआ था। भाजा-विहारश् का महत्त्व प्राचीनता की अपेक्षा मूर्ति अंकनों के कारण अधिक है। इसकी भित्ति पर सूर्य-चन्द्र के उभारे हुए मूर्तनों के रूप में दो विशाल अर्ध-चित्र निर्मित है। ये सूर्य-चन्द्र की असाधारण प्रतिमाएं भारतीय कला में प्राचीनतम है। चित्रों की संयोजना, दृश्यों के संकुलता एवं अनुपातिक अंकन विशेष महत्त्वपूर्ण है। अश्वमुखी यक्षी की जातक कथा का अंकन, वृक्ष से लटकती नरबलि, नृत्यरत नर्तकी की मूर्ति का रूपायन-ये सभी मान भित्ति पर जीवंत हो गए है।

चित्रकला:

वास्तुकला, मूर्तिकला की तुलना में चित्रकला हमें अधिक उत्कृष्ट दिखाई देती है। दूसरी ओर यह भी सच है कि वास्तुकला और मूर्तिकला की तुलना में चित्रकला कम स्थायी होती है, क्योंकि इस पर भौतिक परिवर्तनों का प्रभाव अधिक पड़ता है। इसमें रंग, रूप, आकार, लम्बाई, चैड़ाई आदि होते हैं। रंग, ब्रश, लेखनी आदि इसके मुख्य साधन कहे जाते हैं।

मनुष्य में प्रारम्भ से ही अपने भावों-उद्गार को अभिव्यक्त करने की किसी-न-किसी प्रकार उसको बाहर उडेल देने की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है। इस अभिव्यक्ति ने स्वर-गान, शब्द और नृत्य के साथ-साथ चित्रांकन का रूप भी लिया। चित्रांकन द्वारा अभिव्यक्ति भी मनुष्य ने खूब साधा है। अत्यन्त प्राचीन काल से लेकर आज तक चित्रकला भारतीय संस्कृति जीवन का एक अभिन्न अंग रही है। इस कला द्वारा भारतीय सुरूचि और भावना की रंगमयी अभिव्यंजना होती रही है।

पल्लव काल की मूर्तियों पर में चित्रित नारी का अध्ययन

छठी शती ई. के उत्तरार्ध से लगभग 900 ई. के मध्य अर्थात् 300 वर्षों तक पल्लव राजवंश दक्षिण भारत की राजनीतिक शक्ति थी, जिनकी राजधानी कांची (मद्रास से 40 किलोमीटर दूर) थी। पल्लवों के शासनकाल में तमिलनाडु में मद्रास के आस-पास के क्षेत्रों में अनेक मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ। समुद्री बन्दरगाह पर स्थित होने के कारण महाबलिपुरम् पल्लवों की दूसरी राजधानी थी।वे पल्लव कला के समर्थक थे और उन्होंने दक्षिण में अनेक महत्त्वपूर्ण स्मारक चिह्न बनवाए।

www.ignited.in

शैव धर्म

उपलब्ध जानकारियों के अध्ययन पश्चात् यह ज्ञात हुआ है कि भारत में कुल एक सौ आठ शैव मंदिरों का निर्माण हो चुका है। इनमें से बहुत से मंदिर विदेशी आक्रमणकारियों एवं अन्य कारणों से नष्ट हो चुके हैं, लेकिन वास्तुकारों एवं कला तथा शिल्प शास्त्रियों द्वारा प्रमुखता से प्राप्त मंदिरों की श्रेणी में जाने जाते हैं, उनका उल्लेख निम्नानुसार है। शिव पुराण में आया है कि भूत-भगवान् शंकर प्राणियों के कल्याणार्थ भिन्न-भिन्न स्थानों में तीर्थ-तीर्थ में लिंग रूप में वास करते हैं। जिस-जिस पुण्य स्थान में भक्तजनों ने उनकी अर्चना की, उसी-उसी स्थान में आविर्भूत हुए और ज्योति-लिंग रूप में सदा के लिए अवस्थित हो गये, यों तो शिवलिंग असंख्य है, फिर भी इनमें द्वादश ज्योति लिंग सर्वप्रधान है। शिव पुराण में उल्लेखित क्रमानुसार ये निम्नलिखित हैं।

वैष्णव धर्म -भगवान विष्णु जो सबके पालन हार है, दयावान व कृपालु है, उनमें आस्थावान व्यक्ति वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक होते है। सतयुग में भगवान राम द्वापुर में श्रीकृष्ण अवतरित हुए और उनकी कला व लीलाओं से प्रसन्न होकर वैष्णव मत के अनुयायी हो गए है।

हिन्दू धर्म में समय-समय पर विशेष देवताओं की प्रधानता रही है। कभी किन्हीं देवता की विशेष महत्वपूर्ण या श्रेष्ठ मानकर उनके अनुयायियों की एक लम्बी श्रृंखला बन गई और एक विशेष विधि से उनके द्वारा पूजा का विधान होने लगा। अरस्तु महोदय के शब्दों में भारतीय कला भारतीय संस्कृति की संवाहिका बनकर धार्मिक विचारधाराएं, नैतिक मूल्य, दार्शनिक सोच, आध्यात्मिक आदर्श तथा लोक विश्वास, भौतिक जीवन का सौन्दर्य-परक समृद्ध दृष्टिकोण प्रदान करती है।

दुर्गा:

आदिवराह गुफा में दुर्गा की रमणीय मुद्रा में मूर्ति का अंकन किया गया है। देवी की चार भुजाएं हैं। देवी का नीचे का दायां हाथ अभय मुद्रा में और बायां हाथ काटि मुद्रा में दिखाया गया है। ऊपर वाले हाथों में चक्र और शंख पकड़े हुए है। देवी ने कटिवस्त्र धारण किये हुए है तथा सिर पर कीरिट मुकुट, कानों में कुण्डल व सिर के ऊपर एक छत्र सुसज्जित देवी के दायीं ओर भक्तों की आकृतियां हैं जिसमें से एक भक्त अपना सिर देवी को भेंट करते हुए और दूसरे भक्त को घुटनों के बल बैठे हुए दिखाया गया है। देवी के दोनों ओर दो बौनो की आकृति है। प्रतिमा में सबसे ऊपर दायीं ओर एक शेर तथा बायीं ओर मृग की आकृति को दर्शाया गया है।

चित्र सं.1 दुर्गा, आदिवराह गुफा मंदिर

महाबलिपुरम् और कैलाशनाथ के मन्दिरों में महिषासुर गुफा में देवी और असुर की लड़ाई का अंकन किया गया है। विद्वानों ने महिषमर्दिनी की मूर्ति की बहुत प्रशंसा की है। गांगुली" ने इसे उपासक की मूर्ति नहीं माना बल्कि एक कहानी बताया है जो एक महान युद्ध को दर्शा रही है। इस पूरी लड़ाई का वर्णन वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

यह पल्लव कला का एक श्रेष्ठ नमूना है। इसमें महिषासुर गुफा में देवी और असुर के बीच की लड़ाई को दर्शाया गया है। इसमें देवी को गणों के द्वारा चारों ओर से घिरा हुआ अंकित किया गया है और देवी अपने शेर पर सवार होकर उग्र रूप धारण करके आगे बढ़ रही है। देवी ने अपने आठ हाथों में अलग-अलग शस्त्र लिए हुए हैं, देवी को एक हाथ में धनुष-बाण से असुर पर हमला करते हुए दिखाया गया है, उसकी आंखों में अपनी जीत का पूरा विश्वास है। असुर को भी बहुत ताकतवर, आक्रमक रूप में दृढ़ता से लड़ते हुए दर्शाया गया है। असुर दूसरे राक्षसों की सहायता कर रहा है, जो डर से भाग रहे हैं। असुर के सिर पर छाता यह दिखाता है कि वो अभी तक हारा नहीं है। देवी असुरों पर बाणों की बौछार कर रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विजेता कौन होगा। इस तरह की देवी की अन्य कोई मूर्ति उत्तर भारत में चित्रित नहीं है

चित्र सं.2 महिषासुरमर्दिनी, महिषा गुफा, (महाबलिपुरम्),

स्त्री मूर्ति:

अर्जुन रथ पर स्त्री मूर्ति का अंकन किया गया है। इसमें दो स्त्रियों की मूर्ति हैं जो राजसी अन्दाज में बनाई गई है। इनमें से जवान स्त्री बहुत ही मनमोहक और आकर्षक है, उसके गोल कन्धे, पतली कमर, शुण्डाकार पट्ट, लेकिन मजबूत टांगे और हाथ बहुत आकर्षक व सुन्दर नजर आ रहे हैं। वह मनमोहक सुन्दरता वाली स्त्री है। उसके वस्त्र साधारण है लेकिन उसकी मुद्रा बहुत ही आकर्षक है जो हमें अजन्ता की प्रसिद्ध रानी का स्मरण कराती है। जबकि यह वस्त्रों और सजावट से भिन्न है। लेकिन दोनों पर खर्च एक जैसा है।

राजसी जोड़ा:

मूर्ति में राजसी जोड़ा बहुत आकर्षक ढंग से अंकित किया हुआ है। चैड़ी छाती और गोल कन्धे राजा की प्रतिष्ठा को दर्शा रहे हैं। उसका एक हाथ काठी पर है और दूसरा हाथ भगवान की ओर है। दो राजसी आदमी अपने चेष्टा में एक समान लग रहे हैं। इसी तरह से रानी भी सादृश्य दिखाई दे रही है। रानी के हाथ उसकी गोद में रखे हुए है। यह मूर्ति राजा महेन्द्रवर्मन प्रथम की पत्नी की प्रतीत होती है। जो आदिवराह मन्दिर की गुफा में है लेकिन यहां पर मूर्ति के प्रतिरूप की ओर संकेत किया गया है। पट्टी जैसी कटीसूत्र (Katisutra) और कमर के चारों ओर बंधा हुआ पाश कमरबन्द में बदल गया है जो चैड़ी और कसकर बांधी हुई है। कमरबन्ध पर बायीं तरफ पंखें के आकार का गोटा नजर आ रहा है जो मूर्ति की सुन्दरता को अधिक बढ़ा रहा है।

नागिन:

मामल्लपुरम् में नागिन के भयानक रूप अंकित है, मूर्ति में नागों को एक से ज्यादा फन वाला दर्शाया गया है। इस मूर्ति में नाग-नागिन साथ-साथ है। नागिन का एक ही फन है जो उसके मुकुट से बाहर निकला हुआ है। नागिन का सिर तीन विशालकाय फनों से घिरा हुआ है। उसका सबसे बड़ा फन आकार में नाग के फन जैसा है। कैलाशनाथ मंदिर में एक स्त्री की प्रतिमा को उकेरा गया है जिसमें उसे बांसुरी बजाते हुए दर्शाया गया है।

धर्मराजा रथ (महाबलिपुरम) में एक स्त्री भक्त की शानदार प्रतिमा का अंकन किया गया है। इस मूर्ति में उसे पवित्र जल का पात्र पूजा के लिए ले जाते हुए दिखाया है। स्त्री को त्रिभंगा मुद्रा में एकान्त में दरवाजे के साथ सावधानीपूर्वक उत्कीर्ण किया गया है। उसके हाव-भाव, शरीर का ऊपरी भाग (वक्ष), नितम्ब, टाँगे और पारदर्शी आंचल यहां प्रदर्शित किए गए हैं। स्त्री करन्दामुकुट, कर्ण कुण्डल, चूड़ियों और दोनों टाँगों में पायल से अलंकृत है। उसका कटिबंध कसकर बंधा हुआ है और पारदर्शी घाघरा पैरों के बीच में से खींचने के साथ-साथ दायीं ओर मुड़ा हुआ है। उसके दाहिने हाथ में गुच्छे की गांठ लटकती हुई दिखाई गई है। उसके बायें हाथ में पात्र है और दायां हाथ अंदर की ओर कटक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है।

आदिवराह मण्डप में अंकित राजपरिवार के दो दृश्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। प्रथम मूर्ति में राजा सुखासन मुद्रा में आसन पर विराजमान है और अगल-बगल में दो पत्नियों की खड़ी मुद्रा में आकृति है। लिपिशास्त्र और अभिलेखीय पाठ के आधार पर एच. कृष्ण शास्त्री ने इसे नरसिंह विष्णु की प्रतिमा कहा है, जबकि मान्य धारणा के आधार पर यह पल्लव परम्परा के संचालक सिंह विष्णु की प्रतिमा है। अभिलेख में स्पष्टतः 'सिंह विष्णु है न कि नरसिंह विष्णुश्।

राष्ट्रकूट कला में नारी

पूर्वमध्यकाल में एलोरा महत्त्वपूर्ण कला केन्द्र रहा है। राष्ट्रकूट शासकों के काल में इस कला केन्द्र का विकास हुआ और यहीं तीनों प्रमुख धर्मों-ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन से संबंधित मूर्तियां अपार संख्या में निर्मित हुई। ये मूर्तियां राष्ट्रकूटों के कला प्रेम की साक्षी है। साथ ही तत्कालीन धार्मिक स्थिति, देव लक्षणों एवं स्थापत्य कला की विभिन्न विकसित शैलियों को भी अपने में संजोए हुए है।

एलोरा की गुफाएं पश्चिमी घाट के एलोरा पर्वत पर स्थित है और ये औरंगाबाद से 18 किलोमीटर दूर उत्तर पश्चिम की ओर स्थित है। औरंगाबाद से यहाँ सड़क मार्ग के द्वारा पहुंचा जा सकता है। इन गुफाओं के बहुत बड़े हिस्से पर मूर्तिकारों द्वारा ब्राह्मण, बौद्ध, तथा जैन धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों को उकेरा गया है।

www.ignited.in

एलीफैन्टा मुम्बई के गेटवे ऑफ इंडिया सागर तट से 11 किलोमीटर दूरी पर एक छोटा-सा द्वीप है। विदेशी आगन्तुओं में इस द्वीप को सर्वप्रथम पुर्तगालियों ने देखा तथा यहाँ खड़ी एक विशाल हाथी प्रतिमा के नाम पर इसका नाम एलिफैन्टा रख दिया। इसका वास्तविक नाम यहाँ बसने वाली एक जनजाति के नाम पर था। समुद्री द्वीप की पहाड़ी को काटकर निर्मित की गई यह गुफा अपने अद्वितीय मूर्ति शिल्प तथा आस-पास की दृश्यावली के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

ब्राह्मण देवी प्रतिमाएं:

महिषासुरमर्दिनी

एलोरा की रामेश्वर गुफा में महिषासुरमर्दिनी क चार भुजाएं दर्शायी गयी है। एक बायीं भुजा में जानवर की तुंड को पकड़ा हुआ है, जबकि दूसरी बायीं भुजा में कवच को लिये हुए है। दायें पैर से भैंसे की कमर को कुचला हुआ दिखाया गया है।

महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा का अंकन कैलाश मंदिर में किया गया है। महिषासुरमर्दिनी उन्मुक्ति में असुर और देवियों के मध्य युद्ध के वर्णन को दर्शाया गया है। देवी की अष्टभुजाओं का अंकन किया गया है जिनमें देवी द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के शस्त्र धारण किए गए हैं जो देवी के सिर के चारों ओर प्रभावमण्डल बना रहे हैं। देवी को भैंसे रूपी असुर पर आक्रमण करते हुए दर्शाया गया है। देवी का वाहन शेर शत्रुओं पर झपट रहा है और देवी के गण उनका साथ दे रहे हैं।

देवी की इस प्रतिमा का अंकन कैलाश मंदिर में आठवीं शताब्दी में किया गया है। देवी के आठ हाथ हैं और उन्होंने अपने हाथों में अलग-अलग प्रकार के शस्त्र पकड़े हुए हैं। देवी को शेर पर बैठे हुए दर्शाया गया है। देवी का वाहन शेर अच्छाई का प्रतीक है। देवी की परिचारिकाएं शेर की प्रतिमा के नीचे खड़ी मुद्रा में हैं।

चित्र सं.1 महिषासुरमर्दिनी,

एलोरा की गुफा नं. 15 की पूर्वी दीवार पर सर्वअलंकारों से विभूषित चार भुजाओं वाली महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति अंकित की गई है। देवी के दाहिने पैर के नीचे महिष के मस्तक से निकलते हुए असुर के मानव रूप को दिखाया गया है। महिष के पीछे का भाग देवी के दाहिने पैर की ओर है। दाहिने पैर के समीप ही एक कटा हुआ मस्तक भी दिखाई दे रहा है।

एलोरा की गुफा नं. 27 की पूर्वी दीवार पर चतुर्भुजी देवी को दिखाया गया है। देवी का दाहिना पैर महिषासुर की पीठ पर है तथा दाहिनी ऊपरी भुजा में त्रिशूल है। एक दाहिनी भुजा में खड्ग है जो महिष की गर्दन पर प्रहार की मुद्रा में दिखाया गया है। देवी की एक बायी भुजा में खेटक है तथा अन्य एक बायी भुजा में महिष मुख है।

महिषासुरमर्दिनी की यह मूर्ति 10वीं शताब्दी ई. की है जिसे राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-प्प्प् के शासन के दौरान उकेरा गया है। यहां पर देवी की अष्टभुजाएं दर्शायी गई है। देवी की सबसे नीचली दायीं भुजा में असुर महिष की गर्दन को पकड़े हुए दिखाया गया है। देवी का वाहन शेर है जो अच्छी तरह से देवी के पास बैठा हुआ है। इस मूर्ति में दुर्गा महिषासुर को मारने की मुद्रा में है।

एलोरा गुफा नं. 14 में उत्तरी दीवार पर चतुर्भुजी दुर्गा की प्रतिमा उकेरी गयी है जिसमें देवी के एक दाहिने हाथ में त्रिशूल और एक दाहिना हाथ पैर पर अवस्थित है। देवी का चेहरा स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा है। प्रतिमा के ऊपरी भाग पर दो उड़ती मालाधर आकृतियों का अंकन किया गया है। देवी के वाहन शेर का मुख भग्न है ।

चित्र सं.2 दुर्गा, एलोरा गुफा

गजलक्ष्मी:

एलोरा गुफा नं. 14 में गजलक्ष्मी को द्वि-पंखुड़ी वाले कमल पुष्प पर ललितासन मुद्रा में विराजमान दर्शाया गया है। देवी गले में हार, कानों में कुण्डल, बाजूबन्द और मुकुट से सुसज्जित है। चार हाथों वाली दो आकाशीय परिचारिकाएं चारों ओर घड़े पकड़े हुए चित्रित की गई है। परिचारिकाओं के ऊपर के दो गज गजलक्ष्मी पर पानी की बौछार करते हुए प्रदर्शित किये गए हैं।

चित्र सं.3 महालक्ष्मी

अध्ययन के उद्देश्य

दक्षिण भारतीय कला में नारी की मूर्तियों का अध्ययन।

पूर्व मध्यकालीन दक्षिण भारतीय कला में नारी प्रतिमाओं में गहराई और सूक्ष्मता का अध्ययन।

उपसंहार

भारत में कला और सौन्दर्य का जन्म धर्म और दर्शन की गहराईयों से हुआ। यही कारण है कि भारत में कला को महत्वहीन सांसारिक क्षणिक सुख का साधन न मानकर वरन् उसके भीतर जीवन के मूल तत्वों को निहित किया गया। प्राचीन भारतीय साम्राज्य में भारतीय नारी कला का स्थान विस्तृत है। पूर्व मध्यकालीन समय में, राष्ट्रकूट, पल्लव महत्त्वपूर्ण राजवंशों का आधिपत्य था। जिसमें कल्पना, आदर्श, प्राचीन परम्पराएँ और सृजनशीलता मिली हुई है। इन राजवंशों के शासकों ने अपने-अपने साम्राज्य में कला को प्रमुखता दी थी। उन्होंने अपनी कलाओं में नारी के स्थान को ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना है तथा उनकी धार्मिक मूर्तियों का अंकन मंदिरों की दीवारों और स्तम्भों पर देवी प्रतिमाओं के रूप में किया है, जैसे दुर्गा, महिषमर्दिनी, काली, सप्तमातृका, लक्ष्मी, गजलक्ष्मी, गंगा-यमुना, ज्येष्ठ देवी, सरस्वती, पार्वती को एक साधारण नारी के रूप में भी दर्शाया है। धार्मिक मूर्तियों के साथ-साथ नारी की अन्यविविध प्रतिमाओं को भी मंदिरों की दीवारों और स्तम्भों पर उत्कीर्ण किया गया है। इनमें शासकों और उनकी रानियों की प्रतिकृतियां या व्यक्ति-चित्रण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। संख्या में ये मूर्तियां कम है लेकिन प्रारंभिक काल में निर्मित होने के बाद भी शासकों की छवियों का विशेष महत्त्व था। शासकों की आकृतियों के साथ-साथ अप्सराओं, नर्तकियों, गन्धों, सेविकाओं, द्वारपालिकाओं और ऋषि पत्नियों की प्रतिमाओं का अंकन भी विशेष रूप से किया गया है।

संदर्भ

अमरकोश, (अमर सिंह) हरगोबिन्द शास्त्री प्रणीत टीका सहित, वाराणसी, 1957

आश्वलायन गृहसूत्र, ईस्टर्नबुक लिंकर्स, दिल्ली, 1976

ऋग्वेद, वैदिक संशोधन, पूना, 1863

केन उपनिषद् III, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि. सं 2001

कूर्मपुराण, अध्याय-47, राम शंकर भट्टाचार्य (सम्पादक), वाराणसी, 1969

बृहत्संहिता, सरस्वती प्रेस, कलकत्ता, 1880

मत्स्य पुराण, वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, 1895, हिन्दी अनु० रामप्रताप त्रिपाठी, प्रयाग, 2003

महाभारत, क्रिटिकल एडिशन, पूना

मार्कण्डेय पुराण, अंग्रजी अनुवाद, अफ. आई. पार्जिटर, बिबिलओथिका, इण्डिका, दिल्ली, 1969

रामायण, वासुदेवाचार्य, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1902

रूपमण्डन, बलराम श्रीवास्तव, वाराणसी, सं. 2021

विष्णु धर्मोत्तर पुराण, खण्ड-3, अंग्रेजी अनुवाद, एच. एल. विल्सन, लंदन, 1984

Corresponding Author

Vishal Pandey*

Research Scholar, Shri Venkateshwara University, Gajraula, Amroha

www.ignited.in